Baglamukhi Chalisa Lyrics with Meaning in Hindi and English

Baglamukhi Chalisa Lyrics in Hindi

॥ दोहा ॥
सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूं चालीसा आज ॥
कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज ॥

॥ चौपाई ॥
जय जय जय श्री बगला माता । आदिशक्ति सब जग की त्राता ॥

बगला सम तब आनन माता । एहि ते भयउ नाम विख्याता ॥

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी । असतुति करहिं देव नर-नारी ॥

पीतवसन तन पर तव राजै । हाथहिं मुद्गर गदा विराजै ॥

तीन नयन गल चम्पक माला । अमित तेज प्रकटत है भाला ॥

रत्न-जटित सिंहासन सोहै । शोभा निरखि सकल जन मोहै ॥

आसन पीतवर्ण महारानी । भक्तन की तुम हो वरदानी ॥

पीताभूषण पीतहिं चन्दन । सुर नर नाग करत सब वन्दन ॥

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै । वेद पुराण संत अस भाखै ॥

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा । जाके किये होत दुख-नाशा ॥

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै । पीतवसन देवी पहिरावै ॥

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन । अबिर गुलाल सुपारी चन्दन ॥

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना । सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना ॥

धूप दीप कर्पूर की बाती । प्रेम-सहित तब करै आरती ॥

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे । पुरवहु मातु मनोरथ मोरे ॥

मातु भगति तब सब सुख खानी । करहुं कृपा मोपर जनजानी ॥

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु । तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु ॥

बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं । अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं ॥

पूजनांत में हवन करावै । सा नर मनवांछित फल पावै ॥

सर्षप होम करै जो कोई । ताके वश सचराचर होई ॥

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै । भक्ति प्रेम से हवन करावै ॥

दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई । निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई ॥

फूल अशोक हवन जो करई । ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई ॥

फल सेमर का होम करीजै । निश्चय वाको रिपु सब छीजै ॥

गुग्गुल घृत होमै जो कोई । तेहि के वश में राजा होई ॥

गुग्गुल तिल संग होम करावै । ताको सकल बंध कट जावै ॥

बीलाक्षर का पाठ जो करहीं । बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं ॥

एक मास निशि जो कर जापा । तेहि कर मिटत सकल संतापा ॥

घर की शुद्ध भूमि जहं होई । साध्का जाप करै तहं सोई ॥

सेइ इच्छित फल निश्चय पावै । यामै नहिं कदु संशय लावै ॥

अथवा तीर नदी के जाई । साधक जाप करै मन लाई ॥

दस सहस्र जप करै जो कोई । सक काज तेहि कर सिधि होई ॥

जाप करै जो लक्षहिं बारा । ताकर होय सुयशविस्तारा ॥

जो तव नाम जपै मन लाई । अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई ॥

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा । वाको पूरन हो सब कामा ॥

नव दिन जाप करे जो कोई । व्याधि रहित ताकर तन होई ॥

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी । पावै पुत्रादिक फल चारी ॥

प्रातः सायं अरु मध्याना । धरे ध्यान होवैकल्याना ॥

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी । नाम सदा शुभ मंगलकारी ॥

पाठ करै जो नित्या चालीसा । तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा ॥

॥ दोहा ॥
सन्तशरण को तनय हूं, कुलपति मिश्र सुनाम ।
हरिद्वार मण्डल बसूं , धाम हरिपुर ग्राम ॥

उन्नीस सौ पिचानबे सन् की, श्रावण शुक्ला मास ।
चालीसा रचना कियौ, तव चरणन को दास ॥

Baglamukhi Chalisa Meaning in Hindi

॥ दोहा ॥
सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूं चालीसा आज ॥

- सिर झुकाकर माँ बगलामुखी का वंदन करते हुए मैं आज चालीसा का लेखन कर रहा हूँ।

कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज ॥

- हे माँ ! मुझ पर अपनी सदा कृपा बनाए रखें ताकि मेरे सभी कार्य पूर्ण हो सकें।

॥ चौपाई ॥

जय जय जय श्री बगला माता। आदिशक्ति सब जग की त्राता॥

- जय हो, जय हो, हे माँ बगलामुखी! आप आदि शक्ति हैं और संपूर्ण संसार की रक्षक हैं।

बगला सम तब आनन माता। एहि ते भयउ नाम विख्याता॥

- आपके मुख का स्वरूप बगुले जैसा है, इसी कारण आपका नाम "बगलामुखी" प्रसिद्ध हुआ।

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी। असतुति करहिं देव नर-नारी॥

- आपके मस्तक पर चंद्रमा शोभायमान है और कानों में कुंडल सुशोभित हैं। देवता, मनुष्य और स्त्रियाँ आपकी स्तुति करते हैं।

पीतवसन तन पर तव राजै। हाथहिं मुद्गर गदा विराजै॥

- आपके शरीर पर पीले वस्त्र सुशोभित हैं और आपके हाथों में मुद्गर और गदा शोभित हो रहे हैं।

तीन नयन गल चम्पक माला। अमित तेज प्रकटत है भाला॥

- आपके तीन नेत्र हैं और गले में चंपा के फूलों की माला है। आपके मुखमंडल से अपार तेज प्रकट हो रहा है।

रत्न-जटित सिंहासन सोहै। शोभा निरखि सकल जन मोहै॥

- रत्नों से जटित सिंहासन पर आप विराजमान हैं। आपकी इस दिव्य शोभा को देखकर सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

आसन पीतवर्ण महारानी। भक्तन की तुम हो वरदानी॥

- हे महारानी! आपका आसन पीले रंग का है और आप अपने भक्तों को वरदान देने वाली देवी हैं।

पीताभूषण पीतहिं चन्दन। सुर नर नाग करत सब वन्दन॥

- आपके आभूषण और शरीर पर पीला चंदन है। देवता, मनुष्य और नागराज सभी आपकी वंदना करते हैं।

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै। वेद पुराण संत अस भाखै॥

- जो इस प्रकार आपके दिव्य स्वरूप का ध्यान करता है, वेद, पुराण और संत उसकी महिमा का वर्णन करते हैं।

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा। जाके किये होत दुख-नाशा॥

- अब मैं आपकी पूजा-विधि का वर्णन कर रहा हूँ, जिससे सभी प्रकार के दुखों का नाश होता है।

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै। पीतवसन देवी पहिरावै॥

- सबसे पहले माँ को पीले रंग की ध्वजा चढ़ाएं और उन्हें पीले वस्त्र पहनाएं।

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन। अबिर गुलाल सुपारी चन्दन॥

- कुमकुम, अक्षत (चावल), मोदक, बेसन के लड्डू, अबीर, गुलाल, सुपारी और चंदन चढ़ाएं।

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना। सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना॥

- हल्दी की माला, फल और पान चढ़ाकर भक्त मन में माँ का ध्यान करें।

धूप दीप कर्पूर की बाती। प्रेम-सहित तब करै आरती॥

- धूप, दीप और कपूर से बनी बाती के साथ प्रेमपूर्वक माँ की आरती करें।

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे। पुरवहु मातु मनोरथ मोरे॥

- दोनों हाथ जोड़कर आपकी स्तुति करें और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रार्थना करें।

मातु भगति तब सब सुख खानी। करहुं कृपा मोपर जनजानी॥

- हे माँ! आपकी भक्ति ही सभी सुखों का स्रोत है। कृपया मुझ पर कृपा करें और मुझे अपना भक्त जानें।

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु। तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु॥

- कृपया मेरे तीनों प्रकार के कष्टों (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक) को नष्ट करें और अज्ञान के अंधकार को मिटाकर मुझे ज्ञान प्रदान करें।

बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं। अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं॥

- मैं बार-बार आपके सामने प्रार्थना करता हूँ। मुझे निरंतर आपकी भक्ति और ज्ञान प्रदान करें।

पूजनांत में हवन करावै। सा नर मनवांछित फल पावै॥

- जो व्यक्ति पूजा के अंत में हवन करता है, वह अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करता है।

सर्षप होम करै जो कोई। ताके वश सचराचर होई॥

- जो व्यक्ति सरसों से हवन करता है, उसके वश में समस्त चराचर जगत (जड़-चेतन) आ जाता है।

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै। भक्ति प्रेम से हवन करावै॥

- जो व्यक्ति तिल, चावल और दूध मिलाकर प्रेम और भक्ति के साथ हवन करता है, उसके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई। निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई॥

- ऐसे व्यक्ति के पास न तो दुख और न ही दरिद्रता आती है। वह निश्चित रूप से सुख-सम्पत्ति प्राप्त करता है।

फूल अशोक हवन जो करई। ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई॥

- जो व्यक्ति अशोक के फूलों से हवन करता है, उसके घर में सुख और संपत्ति हमेशा बनी रहती है।

फल सेमर का होम करीजै। निश्चय वाको रिपु सब छीजै॥

- सेमल के फल से हवन करने पर उसके सभी शत्रु निश्चित रूप से नष्ट हो जाते हैं।

गुग्गुल घृत होमै जो कोई। तेहि के वश में राजा होई॥

- जो व्यक्ति गुग्गुल (गंधराल) और घी से हवन करता है, वह राजा (शासन) को भी अपने वश में कर सकता है।

गुग्गुल तिल संग होम करावै। ताको सकल बंध कट जावै॥

- जो व्यक्ति गुग्गुल और तिल के साथ हवन करता है, उसके सभी प्रकार के बंधन (बाधाएं) समाप्त हो जाते हैं।

बीलाक्षर का पाठ जो करहीं। बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं॥

- जो व्यक्ति आपकी बीज मंत्रों के साथ बीलाक्षर (विशेष मंत्र) का पाठ करता है, उसे विशेष सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

एक मास निशि जो कर जापा। तेहि कर मिटत सकल संतापा॥

- जो व्यक्ति एक महीने तक रात्रि में नियमित रूप से जप करता है, उसके सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं।

घर की शुद्ध भूमि जहं होई। साधका जाप करै तहं सोई॥

- जहाँ घर में पवित्र भूमि हो, साधक को वहीं बैठकर जप करना चाहिए।

सेइ इच्छित फल निश्चय पावै। यामै नहिं कदु संशय लावै॥

- वह साधक अपनी इच्छित फल को अवश्य प्राप्त करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

अथवा तीर नदी के जाई। साधक जाप करै मन लाई॥

- या फिर साधक नदी के तट पर जाकर, मन को एकाग्र करके जप करे।

दस सहस्र जप करै जो कोई। सक काज तेहि कर सिधि होई॥

- जो दस हजार बार जप करता है, उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

जाप करै जो लक्षहिं बारा। ताकर होय सुयशविस्तारा॥

- जो व्यक्ति एक लाख बार जप करता है, उसका यश पूरे संसार में फैल जाता है।

जो तव नाम जपै मन लाई। अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई॥

- जो मन लगाकर आपका नाम जपता है, उसके शत्रु बहुत ही कम समय में नष्ट हो जाते हैं।

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा। वाको पूरन हो सब कामा॥

- जो व्यक्ति सात रातों तक लगातार जप करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

नव दिन जाप करे जो कोई। व्याधि रहित ताकर तन होई॥

- जो व्यक्ति नौ दिनों तक जप करता है, उसका शरीर सभी रोगों से मुक्त हो जाता है।

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी। पावै पुत्रादिक फल चारी॥

- जो संतानहीन स्त्री आपका ध्यान करती है, उसे संतान सुख प्राप्त होता है।

प्रातः सायं अरु मध्याना। धरे ध्यान होवैकल्याना॥

- जो प्रातः, सायं और दोपहर में आपका ध्यान करता है, वह कल्याण प्राप्त करता है।

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी। नाम सदा शुभ मंगलकारी॥

- आपकी महिमा का मैं किस प्रकार वर्णन करूं? आपका नाम सदा शुभ और मंगलकारी है।

पाठ करै जो नित्या चालीसा। तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा॥

- जो व्यक्ति नियमित रूप से आपकी चालीसा का पाठ करता है, उस पर माता गौरी की कृपा सदा बनी रहती है।

॥ दोहा ॥
सन्तशरण को तनय हूं, कुलपति मिश्र सुनाम ॥

- मैं संतों की शरण में रहने वाला व्यक्ति हूं, मेरा नाम कुलपति मिश्र है।

हरिद्वार मण्डल बसूं, धाम हरिपुर ग्राम ॥

- मैं हरिद्वार मंडल के हरिपुर गाँव में निवास करता हूँ।

उन्नीस सौ पिचानबे सन् की, श्रावण शुक्ला मास ॥

- यह चालीसा संवत 1995 के श्रावण शुक्ल पक्ष में लिखी गई थी।

चालीसा रचना कियौ, तव चरणन को दास ॥

- यह चालीसा मैंने आपके चरणों की सेवा में रचाई है, हे माँ बगलामुखी!

Baglamukhi Chalisa Lyrics in English

□ Doha □
Sir navaai Baglamukhi, likhoon Chalisa aaj □
Kripa karahu mopar sada, poorn ho mam kaaj □

□ Chaupai □
Jai Jai Jai Shri Bagla Mata □ Adishakti sab jag ki trata □
Bagla sam tab aanan mata □ Ehi te bhayau naam vikhyata □

Shashi lalat kundal chhavi nyaari □ Asatuti karahin dev nar-naari □
Peetavasan tan par tav raajai □ Haathahin mudgar gada virajai □

Teen nayan gal champak maala □ Amit tej prakatat hai bhaala □
Ratn-jatit sinhasan sohai □ Shobha nirkhi sakal jan mohai □

Aasan peetavarn Maharani □ Bhaktan ki tum ho varadani □
Peetabhushan peetahin chandan □ Sur nar naag karat sab vandan □

Ehi vidhi dhyan hriday mein raakhe □ Ved puraan sant as bhaakhe □
Ab pooja vidhi karau prakaasha □ Jaake kiye hot dukh-naasha □

Prathmahin peet dhwaja phaharaavai □ Peetavasan devi pahiraavai □
Kunkum akshat modak besan □ Abir gulaal supari chandan □

Maalya haridra aru phal paana □ Sabahin chadhai dharai ur dhyana □
Dhoop deep karpoor ki baati □ Prem-sahit tab karai aarati □

Astuti karai haath dou jore □ Puravahu maatu manorath more □
Maatu bhagati tab sab sukh khaani □ Karahun kripa mopar janjaani □

Trividha taap sab dukh nashaavahu □ Timir mitaakar gyaan badhaavahu □
Baar-baar main binavahun tohi □ Aviral bhagati gyaan do mohi □

Poojanant mein havan karaavai □ Saa nar manvaanchhit phal paavai □
Sarshap hom karai jo koi □ Taake vash sacharachar hoi □

Til tandul sang ksheer miraavai □ Bhakti prem se havan karaavai □
Dukh daridr vyaapai nahin soi □ Nishchay sukh-sampatti sab hoi □

Phool ashoka havan jo karai □ Taake grih sukh-sampatti bharai □
Phal semar ka hom kareejai □ Nishchay vaako ripu sab chheejai □

Guggul ghrit homai jo koi □ Tehi ke vash mein raja hoi □
Guggul til sang hom karaavai □ Taako sakal bandh kat jaavai □

Beelakshar ka paath jo karahin □ Beej mantra tumharo uchcharahin □
Ek maas nishi jo kar jaapa □ Tehi kar mitat sakal santapa □

Ghar ki shuddh bhoomi jahan hoi □ Saadhka jaap karai tahin soi □
Sei ichchhit phal nischay paavai □ Yaamai nahin kadu sanshay laavai □

Athvaa teer nadi ke jaai □ Saadhak jaap karai man laai □
Das sahasr jaap karai jo koi □ Sak kaaj tehi kar sidh hoi □

Jaap karai jo lakshahin baara □ Taakar hoi suyash vistara □
Jo tav naam japai man laai □ Alpakaal mah ripuhin nasai □

Saptaratr jo paapahin naama □ Vaako poorn ho sab kaama □
Nav din jaap kare jo koi □ Vyadhi rahit taakaar tan hoi □

Dhyaan karai jo bandhya naari □ Paavai putraadik phal chaari □
Praatah saayam aru madhyaana □ Dhare dhyaan hovaikalyana □

Kahaan lagi mahima kahun tihari □ Naam sada shubh mangalkari □
Paath karai jo nitya Chalisa □ Tehi par kripa karahin Gaurisha □

□ Doha □
Santasharan ko tanay hoon, Kulapati Mishra sunaam □
Haridwar mandal basoon, dhaam Haripur graam □

Unnis sau pichaanbe san ki, shraavan shuklaa maas □
Chalisa rachana kiyao, tav charanan ko daas □

Baglamukhi Chalisa Meaning in English

□ Doha □
Sir navaai Baglamukhi, likhoon Chalisa aaj □

- Bowing my head to Mother Baglamukhi, I begin to write this Chalisa today.

Kripa karahu mopar sada, poorn ho mam kaaj □

- Please shower your blessings upon me always, so that all my tasks

may be fulfilled.

□ Chaupai □
Jai Jai Jai Shri Bagla Mata □ Adishakti sab jag ki trata □

- Glory to you, O Mother Baglamukhi! You are the supreme power and protector of the entire world.

Bagla sam tab aanan mata □ Ehi te bhayau naam vikhyata □

- Your face resembles that of a heron, which is why you are renowned as Baglamukhi.

Shashi lalat kundal chhavi nyaari □ Asatuti karahin dev nar-naari □

- The moon adorns your forehead, and your earrings shine with unique beauty. Gods, humans, and women sing your praises.

Peetavasan tan par tav raajai □ Haathahin mudgar gada virajai □

- You wear a yellow garment, and in your hands, a mace and club are splendidly held.

Teen nayan gal champak maala □ Amit tej prakatat hai bhaala □

- You have three eyes and wear a garland of champak flowers. Your face radiates immense brilliance.

Ratn-jatit sinhasan sohai □ Shobha nirkhi sakal jan mohai □

- You sit on a throne adorned with gems, and your divine splendor enchants all who behold you.

Aasan peetavarn Maharani □ Bhaktan ki tum ho varadani □

- O Queen seated on a yellow throne! You are the bestower of boons upon your devotees.

Peetabhushan peetahin chandan □ Sur nar naag karat sab vandan □

- You are adorned with yellow ornaments and sandalwood paste. Deities, humans, and serpent kings all offer you reverence.

Ehi vidhi dhyan hriday mein raakhe □ Ved puraan sant as bhaakhe □

- Those who meditate on you in this form, as described by the Vedas, Puranas, and saints, achieve blessings.

**Ab pooja vidhi karau prakaasha Jaake kiye hot dukh-naasha **

- Now, I describe the method of your worship, which removes all sorrows.

**Prathmahin peet dhwaja phaharaavai Peetavasan devi pahiraavai **

- First, a yellow flag is hoisted, and the goddess is adorned with yellow attire.

**Kunkum akshat modak besan Abir gulaal supari chandan **

- Offer kumkum, rice, modak (sweet), besan sweets, abir, gulal, betel nuts, and sandalwood paste.

**Maalya haridra aru phal paana Sabahin chadhai dharai ur dhyana **

- Present garlands, turmeric, fruits, and betel leaves while keeping divine meditation in your heart.

Dhoop deep karpoor ki baati □ Prem-sahit tab karai aarati □

- Light incense, a lamp with camphor wicks, and perform the aarti with love and devotion.

Astuti karai haath dou jore □ Puravahu maatu manorath more □

- With folded hands, offer praises and pray to fulfill all your desires.

Maatu bhagati tab sab sukh khaani □ Karahun kripa mopar janjaani □

- O Mother! Your devotion is the source of all happiness. Please bless me, recognizing me as your devotee.

Trividha taap sab dukh nashaavahu □ Timir mitaakar gyaan badhaavahu □

- Remove all three types of suffering and ignorance, and grant the light of knowledge.

Baar-baar main binavahun tohi □ Aviral bhagati gyaan do mohi □

- I repeatedly plead before you, Mother. Grant me unwavering devotion and knowledge.

Poojanant mein havan karaavai □ Saa nar manvaanchhit phal paavai □

- At the end of the worship, if one performs a fire offering (havan), they receive their desired fruits.

Sarshap hom karai jo koi □ Taake vash sacharachar hoi □

- Whoever offers mustard seeds in the havan can control all animate and inanimate beings.

Til tandul sang ksheer miraavai □ Bhakti prem se havan karaavai □

- Offering sesame, rice, and milk with devotion during the havan brings divine blessings.

Dukh daridr vyaapai nahin soi □ Nishchay sukh-sampatti sab hoi □

- Such a person is free from suffering and poverty, and prosperity certainly follows.

Phool ashoka havan jo karai □ Taake grih sukh-sampatti bharai □

- Offering ashoka flowers in the havan fills the house with happiness and prosperity.

Phal semar ka hom kareejai □ Nishchay vaako ripu sab chheejai □

- Offering semar fruits in the havan destroys all enemies.

Guggul ghrit homai jo koi □ Tehi ke vash mein raja hoi □

- Those who offer guggul and ghee in the havan gain control over kings.

Guggul til sang hom karaavai □ Taako sakal bandh kat jaavai □

- Offering guggul and sesame together removes all obstacles and bondage.

Beelakshar ka paath jo karahin □ Beej mantra tumharo uchcharahin □

- Reciting your sacred Beelakshar verses along with your beej mantra grants immense power.

Ek maas nishi jo kar jaapa □ Tehi kar mitat sakal santapa □

- Continuous chanting for a month during the night eradicates all suffering.

Ghar ki shuddh bhoomi jahan hoi ▯ Saadhka jaap karai tahin soi ▯

- The practitioner should perform chanting (jaap) on purified ground, as it brings great benefits.

Sei ichchhit phal nischay paavai ▯ Yaamai nahin kadu sanshay laavai ▯

- They will surely receive their desired results without any doubt.

Athvaa teer nadi ke jaai ▯ Saadhak jaap karai man laai ▯

- Alternatively, the practitioner may go to the bank of a river and focus their mind on chanting.

Das sahasr jaap karai jo koi ▯ Sak kaaj tehi kar sidh hoi ▯

- Whoever chants ten thousand times will achieve success in all their endeavors.

Jaap karai jo lakshahin baara ▯ Taakar hoi suyash vistara ▯

- If someone chants one lakh times, their fame and glory spread far and wide.

Jo tav naam japai man laai ▯ Alpakaal mah ripuhin nasai ▯

- Chanting your name with concentration destroys all enemies within a short time.

Saptaratr jo paapahin naama ▯ Vaako poorn ho sab kaama ▯

- Chanting your name continuously for seven nights fulfills all desires.

Nav din jaap kare jo koi ▯ Vyadhi rahit taakaar tan hoi ▯

- A person who chants for nine days becomes free from all ailments.

Dhyaan karai jo bandhya naari ▯ Paavai putraadik phal chaari ▯

- A childless woman who meditates upon you will be blessed with children and other fruits of joy.

Praatah saayam aru madhyaana ▯ Dhare dhyaan hovaikalyana ▯

- Meditating on you in the morning, evening, and noon leads to overall well-being.

Kahaan lagi mahima kahun tihari ▯ Naam sada shubh mangalkari ▯

- How far can I describe your greatness? Your name is always auspicious and brings well-being.

Paath karai jo nitya Chalisa ▯ Tehi par kripa karahin Gaurisha ▯

- Those who regularly recite this Chalisa receive the grace of Goddess Gauri.

▯ Doha ▯
Santasharan ko tanay hoon, Kulapati Mishra sunaam ▯

- I am the son of Santasharan, known by the name Kulapati Mishra.

Haridwar mandal basoon, dhaam Haripur graam ▯

- I reside in the Haripur village within the Haridwar region.

Unnis sau pichaanbe san ki, shraavan shuklaa maas

- This Chalisa was composed in the year 1995, during the month of Shravan Shukla Paksha.

Chalisa rachana kiyao, tav charanan ko daas

- I have created this Chalisa in dedication to your divine feet, O Mother Baglamukhi!